ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 8-12

“सलाम” कहानी का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. मिली भट्ट

स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, प्रेमनगर, झाँसी

Received: 08/08/2026

Revised: 22/09/2026

Published: 02/10/2026

E-Mail
milibhatt@svmjhansi.in

DOI
[XXXXXXXXXXXXXX]

Copyright
© The Authors. This article is published by Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika.

How to Cite
Bhatt, M. (2026). “सलाम” कहानी का समीक्षात्मक अध्ययन. Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika, 1(1), 8–12.
भट्ट, मिली (2026)। “सलाम” कहानी का समीक्षात्मक अध्ययन। भारतीय नव शोध अध्ययन पत्रिका, खंड 1, अंक 1, अक्टूबर–दिसंबर 2026, पृ. 8–12।

सारांश/ Abstract

प्रस्तुत शोध-पत्र में सुप्रसिद्ध दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी-साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए उनकी कहानी ‘सलाम’ तथा अन्य प्रमुख कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना, सामाजिक विषमता और मानवीय संघर्ष का विश्लेषण किया गया है। लेखक की कहानियाँ भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, सामाजिक शोषण तथा रूढ़िवादी परंपराओं की वास्तविकता को उजागर करती हैं। ‘सलाम कहानी में परंपरागत सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध विद्रोह और आत्मसम्मान की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। इसी प्रकार ‘सपना’ , ‘बैल की खाल’ , ‘भय’ , ‘कहाँ जाए सतीश?’, ‘जिनावर’ और ‘अम्मा’ जैसी कहानियाँ दलित समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संघर्षों को प्रस्तुत करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में कथ्य, संवेदना, भाषा-शैली तथा शिल्प-विधान के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि वाल्मीकि का साहित्य दलित जीवन के यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है। उनकी कहानियाँ समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना का संदेश देती हैं। इस प्रकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी-साहित्य हिंदी दलित साहित्य में सामाजिक चेतना और परिवर्तन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

मुख्य शब्द : ओमप्रकाश वाल्मीकि, ‘सलाम’ कहानी, दलित साहित्य, दलित चेतना, जातिगत भेदभाव, सामाजिक विषमता, मानवीय गरिमा।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 8-12

1. प्रस्तावना

सुप्रसिद्ध दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्यकारों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 'दलित जीवन की कहानियाँ' आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में हुए नए प्रयोग की बुनावट को रेखांकित करती हैं। दलित कहानी-लेखकों का मूल उद्देश्य समाज के शोषित एवं दलित मनुष्यों के जीवन की आशाओं और आकांक्षाओं को कहानियों में व्यक्त करना तथा उनके मानवीय अधिकारों के लिए प्रतिबद्ध रहना रहा है।

वाल्मीकि की कहानियों में दलितों की वेदना, निरंतर संघर्ष, सुविधा-भोगी लोगों के प्रति विरोध तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीने की विवशता का चित्रण मिलता है। यातनाओं और शोषण के बावजूद पात्रों में जीवन के प्रति अदम्य तथा संघर्षशील जिजीविषा विद्यमान रहती है। उनकी कहानियाँ दलित जीवन की कड़वी सच्चाइयों और सामाजिक असमानताओं को सामने लाती हैं।

'सलाम' कहानी-संग्रह में चौदह कहानियाँ संकलित हैं। इनमें 'सलाम', 'भय', 'कहाँ जाए सतीश?', 'विरम की बहू', 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', 'कुचक्र', 'बैल की खाल' और 'अम्मा' विशेष रूप से चर्चित हैं।

2. अध्ययन का उद्देश्य एवं दृष्टिकोण

इस लेख का उद्देश्य ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' तथा चयनित कहानियों में दलित चेतना, जातिगत भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियों, आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा के चित्रण को समझना है। साथ ही कथ्य, संवेदना, भाषा-शैली और शिल्प-विधान के आधार पर इन कहानियों के सामाजिक महत्त्व को रेखांकित करना है।

यह उद्देश्य उपलब्ध लेख-सामग्री के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। मूल सामग्री में अलग से औपचारिक शोध-पद्धति या शोध-प्रश्नों का विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

3. 'सलाम' कहानी : कथ्य एवं सांस्कृतिक विद्रोह

कहानी-संग्रह की पहली कहानी 'सलाम' है। इस कहानी का प्राणतत्त्व दलित पात्र हरीश का सांस्कृतिक विद्रोह है। वह सदियों से सामाजिक रस्म के रूप में चली आ रही परंपरा को तोड़ता है। गाँव-देहात के कायदों एवं नियमों के अनुसार हरीश को 'सलाम' के लिए गाँव में जाना था। यह रस्म बारात की विदाई से पहले निभाई जानी थी। हरीश इस प्रथा का विरोध करता है और सलाम पर जाने से साफ इनकार कर देता है। यही इस कहानी की दलित चेतना है।

4. अन्य कहानियों में दलित जीवन का यथार्थ

4.1 'सपना' : धार्मिक स्थल और सामाजिक असमानता

'सपना' कहानी में दलितों द्वारा मंदिर-निर्माण में विशेष पहल करने के बाद भी अनुष्ठान के समय उनकी जाति आड़े आती है और जाति के अनुसार उनका स्थान जूतों-चप्पलों के आस-पास निश्चित कर दिया जाता है। इस तरह कहानी मंदिर-व्यवस्था में दलितों की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है।

4.2 'बैल की खाल' : श्रम और सामाजिक यथार्थ

'बैल की खाल' कहानी में 'काले' और 'भूरे' मरे हुए मवेशियों की खाल उतारने का काम करते हैं। लेखक इन पात्रों के माध्यम से उनके यथार्थ जीवन का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

4.3 'भय' : जाति छिपाने की विवशता

'भय' कहानी जाति छिपाने से पैदा होने वाली विसंगति और उससे जुड़े सुख-दुःख की विडंबना को सामने लाती है। भय इस कहानी का मूल तत्त्व है।

4.4 'कहाँ जाए सतीश?' : जातिगत बहिष्कार

'कहाँ जाए सतीश?' एक ऐसे दलित बालक की कहानी है, जो अपने समुदाय के पारंपरिक पेशे में नहीं जाना चाहता। वह घर छोड़कर पंत परिवार के यहाँ किराएदार के रूप में रहता है, लेकिन उसकी जाति का पता चलने पर उसे निकाल दिया जाता है। कारखाने के मालिक से सहायता माँगने पर भी उसे निराशा मिलती है। सतीश के सामने उपलब्ध रास्तों में से कोई भी उसे मुक्ति की ओर नहीं ले जाता। यही कहानी की विडंबना है।

4.5 'जिनावर' : स्त्री की पीड़ा और सामंती परंपरा

'जिनावर' कहानी में बहू के माध्यम से चौधरी खानदान की अमानवीय परंपरा उजागर होती है। बहू बताती है कि किस तरह उसने सामंती परिस्थितियों के साथ समझौता करने का दबाव झेला। उसका कथन-"इस घर का तो रिवाज ही है, यहाँ औरत इस्तेमाल की चीज़ है; चौधरी मेरा ससुर नहीं, खसम बनना चाहते थे"—स्त्री की गरिमा पर होने वाले आघात को सामने लाता है।

यहाँ बहू की वेदना केवल एक परिवार की समस्या नहीं रहती, बल्कि अनेक स्त्रियों की असमान और असुरक्षित स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है।

4.6 'अम्मा' : निष्ठा और आत्मसम्मान

'अम्मा' कहानी में अम्मा एक खुद्दार नारी के रूप में प्रस्तुत होती है, जिसकी निष्ठा, लगन और ईमानदारी उल्लेखनीय है। वह चारित्रिक उत्कृष्टता की साक्षात् मूर्ति के रूप में सामने आती है।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 8-12

5. दलित चेतना एवं सामाजिक प्रतिरोध

'अम्मा', 'ग्रहण', 'विरम की बहू', 'सलाम', 'कहाँ जाए सतीश?', 'भय' और 'अंधड़' जैसी कहानियाँ वाल्मीकि समुदाय के त्रासदीपूर्ण जीवन को सामने लाती हैं। ये रचनाएँ समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों को उजागर करती हैं। इनके पात्र अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं और अपने सम्मान के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

वाल्मीकि की कहानियाँ रूढ़ियों का विरोध करती हैं और जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, सामाजिक बहिष्कार तथा अमानवीय परंपराओं की आलोचना करती हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के पक्ष में खड़ा दिखाई देता है।

6. भाषा-शैली एवं शिल्प-विधान

वाल्मीकि ने दलित जीवन से संबंधित लोकभाषा के प्रतिरोधात्मक और विद्रोही तेवर को प्रभावशाली ढंग से उभारा है। ग्रामीण जीवन की बोलियों के शब्द, प्रतीक, मुहावरे और ध्वनियाँ यथार्थ जीवन की कलात्मक पहचान बनते हैं। आंचलिक अभिव्यक्तियाँ कहानियों को प्रामाणिकता प्रदान करती हैं।

नाटकीय संवाद, अनुकरणात्मक ध्वनियाँ और कथ्य के अनुरूप शैली की विविधता शिल्प की मौलिकता तथा ताजगी का परिचय कराती हैं। दलित जीवन को केंद्र में रखकर बुनी गई इन कहानियों में संवेदना और शिल्प आधुनिक हिंदी कहानी में नए प्रयोग का बोध कराते हैं।

7. सामाजिक प्रासंगिकता एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन

इन कहानियों का सामाजिक महत्त्व इस बात में है कि वे जाति-आधारित भेदभाव को केवल निजी समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना से जुड़ी असमानता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। 'सलाम' में परंपरागत रस्म का अस्वीकार आत्मसम्मान और प्रतिरोध का प्रतीक है; 'सपना' धार्मिक-सामाजिक व्यवस्था में असमानता को सामने लाती है; 'कहाँ जाए सतीश?' सामाजिक बहिष्कार की विडंबना दिखाती है; और 'जिनावर' स्त्री की गरिमा तथा सामंती सत्ता पर प्रश्न उठाती है।

इस प्रकार वाल्मीकि की कहानियाँ पाठक को सामाजिक रूढ़ियों की आलोचनात्मक समीक्षा करने तथा समानता और मानवीय गरिमा पर आधारित समाज की आवश्यकता समझने के लिए प्रेरित करती हैं।

8. निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी-साहित्य दलित जीवन के यथार्थ, सामाजिक शोषण और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति है। 'सलाम' कहानी में हरीश का विद्रोह आत्मसम्मान तथा जातिगत व्यवस्था को चुनौती देने का प्रतीक बनता है। अन्य कहानियाँ दलित समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संघर्षों के विविध पक्षों को उजागर करती हैं।

वाल्मीकि की लोकजीवन से जुड़ी भाषा और यथार्थपरक शिल्प उनकी कहानियों को प्रभावशाली बनाते हैं। उनका साहित्य दलित चेतना को मुखर करते हुए समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है। इस दृष्टि से उनका कहानी-साहित्य हिंदी दलित साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

- वाल्मीकि, ओमप्रकाश। 'सलाम' (कहानी-संग्रह)। प्रकाशक, प्रकाशन-वर्ष तथा संस्करण का विवरण उपलब्ध मूल सामग्री में स्पष्ट नहीं है।
- वाल्मीकि, ओमप्रकाश। 'दलित जीवन की कहानियाँ'। प्रकाशक, प्रकाशन-वर्ष तथा संस्करण का विवरण मूल सामग्री से सत्यापित किया जाना शेष है।